210 P
772
H
Microfilm

8/2011

891.431
Sh23S

भारतीय प्रकाश कार्य्यालय का सातवाँ पुष्प

शहीदे-नौरत्न

—:❀:❀:❀:—

यही दुनिया से अब इन सूरमों की रूह कहती है।
ग़रीबों को मिले रोटी तो मेरी जान सस्ती है॥

संकलन कर्ता:—

श्रीयुत शर्मा "विमल"

प्रकाशक:—

पं० बैजनाथ बाजपेई 'बिकास'

कानपुरी

संचालक

भारती प्रकाश कार्य्यालय

प्रयागनारायण का मन्दिर, कानपुर।

—:❀:—

प्रथम बार] सन् १९३१ [मूल्य =)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 772
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

भारतीय प्रकाश कार्य्यालयकी उत्तम २ पुस्तकें व मनोहर २ गाने राष्ट्र में प्रकाशित करने का साहस देखकर भला कौन प्रशन्न न होगा कि भारतीय ललनाएं और कन्यायें बड़े प्रेम से गाती हैं। प्रचारार्थं पुस्तकें एक फारम की टाइटिल दार ३=) में दी जाती है!

लखनऊ की नादिरशाही	-)॥	पेशावर का हत्याकांड	-)॥
बम्बई का दमन	-)॥	कलकत्ता की धरपकड़	-)॥
शोलापुर का ज़ुल्म	-)॥	धरसना का धावा	-)॥

दमन सभा तथा जख्मी भारत छा हो भाग ॥)

इन पुस्तकों में सारे भारतवर्ष के दमन का हाल होगा आयन्दा ब्लाक देखने योग्य होंगे। शहीदे नौरत्न दूसरा भाग =)

नोट—भारतीय समाज के मूल पतन का कारण क्या है? जिला शहर कस्बा गांव हर जगेह उतसाही कामों में तवायफ़ यानी रंडियाँ, व सपेड़ा, रहस, स्वांग मंडलियों का जलसा कराना ही है इनके कुरुच पूंण गन्दे दुराचार फैलाने वाले गानो का अनपढ़ जनता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, आशा है कि विचार शील महानुभाव इस भयंकर होने वाले अनर्थ कि ओर अवश्य ध्यान देकर राष्ट्रीय शुद्ध भजनों को सुनकर आदर सतकार सहित प्रेम उत्साह बढ़ाना चाहिये।

भजन मण्डली के नियम

भारतीय प्रकाश कार्य्यालयमें भजन मंडलियों का प्रबन्ध किया गया है। जिन भाइयों को जरुरत हो एक वार अवश्य परिक्षा कीजिये। (१) पहिलेदिन का १०) रु० (२) दूसरे दिन का ८) रु० लिया जाता है इसी तरह जितने दिन चाहे उतनेही दिन रख सकते हैं खाना खुराक व रेलका खरच अलगसे लिया जयगा, भजनीय हरमोनियम तबला और भी गाने वाले होंगे

शहीदे नौरत्न ।

श्री मालप्पा धान शेठी व कुरबान को. और किसनलाल .को भी मिटाया तैंने । था जगन्नाथसिंधे का दिल पर ज़खम, फिर भगतसिंहको फाँसी चढ़ाया तैंने, जोथा सुखदेव भारतका प्यारा बड़ा, मारकर उसकाखूभी बहाया तैंने यह भीनिरदोष प्यारा था राजगुरु, चन्द्रशेखर को भी अजमाया तैंने ॥ इस तरह जुल्म कबतक किये जायगा. शुक्ल शालिग पे गोली चलाया तैंने , हिन्द वालो जरा ख्याल दिलमेंकरो, जोये नौरत्न गाना है गाया मैंने। तेरे हाथों से नवरत्न जाते रहे, प्रेम खद्दर से क्यों न बढ़ाया तैंने। हरी तबियत को कर अबतो सोचो 'विमल' बाना आज़ाद अपना बनाया तैंने ॥

वीर सैनिक

हम दिखायेंगे तुम्हे वह कुव्वते फ़रियाद की ।
बेसदा होगी नहीं जंजीर है आज़ाद की ।
कौन कहता है कि मेरा रायगां खूं जायगा ।
मरने वालों ने जब एक दुनियां नई आबाद की ।।
किस तरह से जंग करते हैं वतन के वास्ते ।
किस तरह से जान देते हैं वतन के वास्ते ॥
फ़क़त दुनियां में तुम्हें थे यह बताने आये हम ।
खुश रहो अहले वतन चलते हैं बन्देमातरम ॥
वही शाहे शहीदां है, वही है रौनक़े आलम ।
वतन पर देके जां जो जंग के मैदां में सोता है ॥
उसी का नाम रोशन हैं, उसीका नाम बाक़ी है ।
कि जिसकी मौत पर दुनियां का हर इंसान रोता है ।
जराबेदार हो, अब ख़्वाबे ग़फ़लत से जवानों तुम ।
कि जिसमें ज़ोरे बाज़ू है वही, "आज़ाद" होता है ॥

वीर शालिगराम ।

हाय किस्सा कानपुर का भी सुनाना हो गया ।
वीर शालिगराम सुरपुर को रवाना हो गया ॥
टेक थी झंडा उखड़ जाये न चमनिस्तान का ।
फिर तो उस विद्यारथी का वीर बाना हो गया ॥
डी. ये. बी. कालेज का विद्यारथी था होनहार ।
शुक्ला शालिगराम का भी दिल दिवाना होगया ॥
द्वार पर कालेज के गोली चली उस वीर पर ।
अन्याय से मारा गया आंसू बहाना हो गया ॥
छोड़कर भागा बिमल को दोस्त जिगरी के नौजवां ।
था हरी वो वीर जो उस दम रवाना हो गया ॥

मरदाना भगतसिंह ।

सरताज नव जवानों का मरदाना भगतसिंह ।
आजादी का दिवाना था मरदाना भगतसिंह ॥
लाहौर का था रहने वाला शेरे बबर दिल ।
आजादी की थी चाह उसे मस्ताना भगतसिंह ॥
होती थी मीटिंग ऐसेम्बली में जिस दम फेका बम ।
बम केश में पकड़ा गया, मस्ताना भगतसिंह ॥
देता था लाल पर्चे वह लाहौर के थानो में ।
हो जावो होशियार यह कहता था भगतसिंह ॥

सरदार भगतसिंह का राग ।

डरे न कुछ भी जहां की चला चली हम ।
गिरा के बम भी न भगे असेम्बली से हम ॥
उड़ाये फिरता था हमको ख्याल मुस्तकबिल ।
कि बैठ सकते न थे दिलकी बेकली से हम ॥

जो जी पे आये तेरे शौक़ से सुनाये जा।
कि तेश खाते नहीं हैं कटी जली से हम॥
है इन्क़ाब की कुरबान गाह पर चढ़ते।
कि प्यार करते हैं ऐसे महावली से हम॥
न तू हो चीव जवी त्यौरियों पै डाल न बल।
चले चले ओ सितमगर तेरी गली से हम॥

सहीदों का फैसला।

दो०—शहीदों के फैसले, के मित्रः अनुसार।
फांसी को सुखदेव जी, प्रथम उठा ललकार॥

यह देख भगतसिंह बोल उठा, हट जाओ मुझको जाने दो।
उत राजगुरू भी बोल उठे, नहिं पहिले मुझको जाने दो॥
आखीरी यही फिर तय पाया, सुखदेव चढ़ गया फांसी पर।
भारतमाता को शीश नवा, कुर्बान होगया फांसी पर॥
जब फांसी के तख़्ते से, सुखदेव की लीनी लाश हटा।
इतने में सीना फुलाते हुये, सरदार भगतसिंह आन डटा॥
उन चाह भरी निगाहो से, फांसो के तख़्ते को देखा।
चुम्बन करके प्यार किया, और उसके आगे सर टेका॥
और डाउन २ यूनियन जैक, बृटिस झंडे का शर्वनास।
यह नारे लगायें जोरो से, एकबार गूँज गया है आकाश॥
यह कहते २ लटक गये, फिर न दुबारा आँख उठी।
कुछ क्षण को बिजली सी चमकी और पृथ्वी माता काँप उठीं॥
दो०—राजगुरू यह देख के, भरलाये नैनो नीर।
सबके पीछे में रहा, हूँ फूटी तकदीर॥
क्या खता थी मेरी प्यारे मित्रो कहो।
जो मुझको पिछाड़ी गये छोड़ कर॥

क्या इसी युग में ही हा ! पापी हुआ।
पहले चल दिये मुझसे यों मुंह मोड़कर

दोहा– क्षण ही मात्र के वास्ते, होगये वीर अधीर,
फिर बोले यों धाड़ कर, दिल में बांधो धीर।

अच्छा लो मैं भी आता हूं, उसी स्वर्ग की सीढ़ी से,
कर लिया रास्ता याद खूब, इस स्वर्ग नाम की सीढ़ी से ।
हों परस्पर लड़ने वाले, बरबाद किस तरह होते हैं,
और आजादी के मतवाले जो, आजाद इस तरह होते हैं ।
यह कह कर चढ़ गये फांसी पर, और भारतमाता की जै बोली,
यक क्षण वो बलिदान हुये, बन्द होगई आँख बाद बोली ।
तेइस मार्च को हुये शाम समय बलिदान,
लगभग साढ़े सात बजे, या आठ के अनुमान ।
जब तक है लेखनी कबियों की, तब तक यह नाम अचल रहेगा,
प्रताप स्वतंत्र इन वीरों का, नहीं खून कभी बिफल होगा।

गजल ।

सुखदेव भगवतसिंह राज गुरु थे शमाँ वतन के परवाने ।
जो सोज दिलों में उनके था, उस सोज को कोई क्या जाने ॥
इस जँगो जदल का आपदा, अहवाल अब हाल जो लिखने बैठेंगे।
लिखेंगे सुनहरे हरफों से, तारीफ में इनके अफसाने ॥
यह शौक़ शहादत दिलमें था, वह दार से बोसा देके चढ़े ।
मुश्ताक अजल थे बरसों से, लैलाये वतन के दिवाने ॥
कातिल की हिलादी बुनयादे, नारों से मिटाया नारों ने ।
ज़ोरो रोब सितम का बाकी था, इस वक्त रुपये में दो आने ॥
सतलज के किनारे आती है, आवाज़ चितों के जरी से।
सुखदेव भगवतसिंह राज गुरू थे शमाँ वतन के परवाने ॥
अज़ मौलाना इनाम उल्ला खाँ नासर हसनपुरी ।

शोक

हम दोश पै लाशों को उठाने भी न पाये।
हम फूल शहीदों पे चढ़ाने भी न पाये ॥
हम अश्क चिताओं पे गिराने भी न पाये।
हम आतीशे सोजां को बुझाने न पाये ॥
दर्दे दिले महजू को मिटाने भी न पाये।
मा बाप कलेजे से लगाने भी न पाये॥
जांबाजों ने दम तोड़ दिया कुञ्जे कफ़स में।
वह आखरी पेगाम सुनाने भी न पाये ॥
बेताब थे वह सोगये आगो शेअज़ल में।
जो उनपे गुजरती थी सुनाने न पाये ॥
सद हैफ़ आरजू यह दिल में हमारे।
लाशों को शहीदों की जलाने भो न पाये ॥
सतलज में योंहीं फेंक दिये जिस्म हमारे।
जो फूल थे गंगा में बहाने भी न पाये ॥
जो रंज से भर आया छुटा हाथ से खतम।
हम किस्से पुरदर्द सुनाने न पाये ॥
उठ रहे शीले जिगर में देखकर तस्वीर को !
हार हम आया नहीं है जालिमें वेपीर को ॥
सारे भारतवर्ष ने निर्दोष ठहराया इन्हें,
मन की मानी करली तैंने तान के शमशीर को ॥
धन्य है वीरो तुम्हे चारो तरफ जस छा रहा,
बलिदान बेदी पर हुये है वाह क्या तक़दीर को
हिन्द वालों को जो शूली दी है तूने बेखता ॥
ये तोसे शैदाये वतन थे जैसे रांझा हीर को,
जालिमों का जुल्म अब होने न पावे हिन्द में ॥
क्या 'हरीं' भूले 'विमल' अर्जुन के बांके तीर को,

ख़्याल शिकस्ता

तुझी से गुलज़ार होरहा था,
ये हिंद का पुर चमनभगतसिंह ।
तुम्हारी क़िसमत को आफरीसद,
निसार अहले वतन भगतसिंह ॥
नहीं था इन्साफ ट्रिबनल को.
जो हुक्म सूली था हुक्म राँ का।
ग़रूब यो आफताब होगा,
हमारे भारत के आसमाँ का।
वो दर्द कौमी था दिल में तेरे,
अजब ज़िक्र तेरीखुश ज़बाँ का ॥
तेरी परेशानियों से उमड़ा, यो जोश हर एक नौजवां का ।
शैर—ऐ नौजवान हिंद उठो ख्वाब से जरा ।
आज़ाद मुल्क अपना बनाते चले चलो ॥
आये जो सर बलाये लगालो गले उन्हें ।
जोशे वतन ज़रुर दिखाते चले चलो ॥
बनाना अजाद मुल्क को था,
यही थी तुझको लगन भगतसिंह ॥
वो तेरी निस्वार्थ देश सेवा जो मुल्क बेदार देखते हैं ।
तेरे तसौव्वर में नवजवानों को चढ़ते हम दार देखते हैं ॥
वो बीर कुरबानियों सेतेरे पशेमा अगियार देखते हैं।
तमाम मखलूक तेरे गम में बना यों लाचार देखते हैं ॥
शैर—राहत न गुलामी में कभी होगी मय्यसर,
ये ख्याल अपने दिल से हटाते चले चलो ।
कैसे गरीब मुल्क की आसा हो मुश्किलें,
जब तक स्वराज्य हो न सुनाते चले चलो ॥

गरजते थे जेल सीखचों से,
केहरी शेर बन भगतसिंह ॥ तुम्हा० ॥
तेरी देलेरानी देख हिम्मत वो चर्ख चक्कर में आरहा था ।
नहीं था खौफे खुदा सितमगर गजब के फितने उठा रहा था ॥
वो ख़ुद गरज पालसीसे दुश्मन जुल्म ज़ालिमाना ढा रहा था ।
जो शर्तें थीं संधि की उन्हीं से गरज़की मतलब बना रहा था ॥
शैर—जो देखते हैं तुमको तगफुल की नजर से,
उन बद गुमानियों को हंसाते चले चलो ।
जैचन्द मीरजाफरो करते हो क्या सितम,
फितने गजब के अब न उठाते चले चलो ॥
वो सूरतें इनकिलाब होने को बांधे थे,
सर कफन भगतसिंह ॥ तुम्हा० ॥

चढ़े दार शेर हँसते २ इलाही इन्साफ ये कहां का ।
तमाशा होने को है कयामत उबल रहा खून नौजवां का ॥
वो मौत ने शानदार तेरी बदल दिया रंग आशमां का ।
स्वराज्य होने को हिन्द में है खतम हुआ जोरबदगुमाँ का ॥
शैर—लन्दन की तर्फ जाने वाले हैं लीडरान,
आजाद अब तो होंगे बताते चले चलो ।
हिन्दू क्या सिक्ख जैन मुसलमान इसाई,
'अरमान' हुक्म गांधी बजाते चले चलो ॥
ख्याल 'मोहन' कहे हैं राधे,
'विमल' हुआ पुर सखुन भगतसिंह ॥

—:❀:❀:❀:—

भारतीय शहीदों की गज़ल ।

शहीद होकर वतन परस्तों का खून कहता सुना २ कर ।
कि खून से ये वतन चमन का तुम, अपना सींचो बहा २ कर ॥
वे देश से उन्स रखने वालों दिलों से अब बुज़दिली निकालो ।
खुशी से सरको कटावो वो भी तो देखें खंजर चला २ कर ॥
अगर देश को स्वतन्त्र करना हो चाहते तो झिझक न खाना ।
कदम ही आगे बढ़ा ले जावो तुम अपनी हिम्मत बढ़ा २ कर ।
किसी का मुतलक न खौफ खावो बहादुराना झलक दिखावो ।
निकल के मैंदा में आवो बीरो ये सर हथेली जमा २ कर ॥
बद्‌दू के हमलों से दिल न तोड़ो न ध्यान धर्म धीरज को छोड़े ।
करें जो हिन्सा अगरचे तुम को वो तेगे बुरी दिखा २ कर ॥
कहां को जाते हो देखो भालो न जिन्दगी को खतरे में डालो ।
भंवर से बेड़े को अब निकालो सब अपनी हिम्मत लगा २ कर ॥
अगर हिन्द से है कुछ मुहब्बत करो जहां तक भी हो हिफाजत ।
स्वतन्त्र भारत करो जरूरी तुम अपनी गरदन कटा २ कर ॥

गजल ।

सुनो भारत वीरो धर ध्यान, मिटा दो अन्यायी की शान ।
सत्याग्रह संग्राम मचाओ, देश धर्म पर शीश कटाओ ॥
भारत को आजाद बनाओ हिंसा भाव न मन में लाओ ।
शांति की लेकर नग्न कृपान ॥ मिटा० ॥
ये ही है वीरों का बाना, हँसतेही हँसते मिट जाना ।
पीछे पैर न कभी हटाना, प्रण हो ऐसा दिल में ठाना ॥
यही है मोहन का फर्मान ॥ मिट० ॥
हैं होते जो २ अत्यार, किया है उन पर कभी विचार ।
धरसना शोलापुर की मार, हो गये हैं ज़ालिम ये ज़ार ॥
युवतियों का करते अपमान ॥ मिटा० ॥

गजल ।

नौजवानों और किसानों का कर्तव्य ।

उबल उठा है रुधिर यकायक बालक बृद्ध जवानों का ।
सकल हिंद ने किया समर्थन, पतन करो फरमानों का ॥
टेक०-रोको स्वयं स्वयम्सेवक बन, मारग ताड़ी खानों का ।
करो न अब स्पर्श उठादो चलन विदेशी बानों का ॥
लगें सभायें गांव २ में, हो संगठन किसानों का ।
डरो न करो ज़िमीदारों को देना बन्द लगानों का ॥
साहस कर के सहो दमन दुख, बन के लक्ष निशानों का ।
कष्ट कस डटो कटो हँस के तजो प्रेम सन्तानों का ॥
करो अहिंसा का प्रण पालन धर्म ऋषी सन्तानों का ।
हल चल मचे देख रिपु दल में, साहस शूर सुजानों का ॥
अबला सबल बनी रण चन्डी, करें भ्रमण मैदानों का ।
लेकर ध्वजा निरंकुश निर्भय, धरना धरें दुकानों का ॥
साहस करो "बिमल" अब अपने दे २ कर बल प्राणों का ।
तो स्वराज्य फल तुझे मिलेगा, तुरत फुरत बलिदानों का ॥

गजल ।

दमन सितमगर से न मुज़तरिब, नहीं जेल का ख़ौफ़ है ग़ालिब
धमकी दिखलाना बेकार ॥ ज़ुल्म न कर ॥
सीना सिपर खड़े हैं हम सब, गोली भी चलवाले तू अब ॥
दिल में रहे न कोई गुबार ॥ ज़ुल्म ॥
हम गुलाम अब नहीं रहेंगे, होगी जो तकलीफ सहेंगे ॥
हमको है भारत से प्यार ॥ ज़ुल्म ॥
बीरो उठो ख्वाब गफ़लत से, बढे चलो आगे हिम्मत से ॥
खुद हो बदू ज़लीलो ख़्वार, ज़ुल्म न कर तू ऐ सरकार ॥

घिरे हुये हिन्दुओं को भेजा इधर है जब भर के एक लारी।
पड़े टूट कई मुसलमां उन पर गोल बांध के हैं कांताधारी॥
कहा एकता पे लेना चाहो तो लेलो हाजिर ये जां हमारी।
मगर क़ातिलों ने मार डाला, कहूँ कहां तक अनीति भारी॥
शैर-दी छिपा फिर लाश उनकी इस कदर की संग में चाल।
सनसनी जब है मची तब दी सड़क पर लाके डाल॥
दूसरे दिन शाम को वह लाश पहुँची अस्पताल।
देखा जब महावीर सिंह ने तब हुआ अजहद मलाल॥
उ०-बड़ी मुश्किलों से उस घड़ी पर वो वीर पहचाना जा रहा है।
मगर किसी चालबाज ने भी करी है होशियारी एक आकर॥
लाश भैरोंघाट भेज दीनी हरएक की है नजर बचा कर।
खबर ये सुनकर है लाश रोकी तुरत जवाहरलाल ने जाकर।
कुटुम्बियों के सहित है पबलिक फजरको पहुँची खबर है पाकर
शैर-घी व चन्दन से हुआ जिस वक्त उनका संस्कार।
हर बशर की आँख से बहने लगी आँसू की धार॥
जोग बाबू को भी उस दम देख के गश आगया।
जाफ आया बहन को जब दृश्य ये देखा निहार॥
उ०-सुना जो कानों से, आँखों देखा वोहाल 'सप्ता' सुना रहा है।

कौमी झगड़ा।

हुवा कानपुर में कौमी झगड़ा नजर में आता मशान देखो।
हुई लूट है बड़े जोर की जले पड़े हैं मकान देखो॥
वो ढाये देते हैं महजितों को न कोई पढ़ता कुरान देखो।
गिराये देते हैं मन्दिरों को लिये हथेली पे जान देखो॥

सुना विद्यार्थी जी ने कदम अपना बढ़ाया था।
मक्का से चल दिये अपने नहीं खाने को खाया था॥
उ०—चला था राहत दिलाने सब को खुद चले गये उनके प्राण देखो
पड़े हो गफ़लत की नींद में तुम कहां तुम्हारा है ध्यान देखो॥
ये भारतवासी करो संगठन नहीं तो बिगड़ेगी शान देखो।
"विमल" के दिल में हरी समाना करें हैं राष्ट्री गान देखो॥

कानपुर का हिन्दू—मुस्लिम दङ्गा

ख्याल शिकस्ता

गजब के फितने उठायेंगे क्या फरिस्ते खूंख्वार हिन्दू-मुस्लिम।
ये खूने नाहकसे क्या भलाहो समझलो ऐयार हिन्दू-मुस्लिम॥
थी चौबीस तारीख योम मंगलभगतसिंह का था मातमी गम।
वो खुश्क लब सूरतें जर्द थी ये मुल्क था बेकशी का आलम॥
यहाँ के वाशिन्दगानियों में था जोशे मजहब हुवा न वो कम।
लगे फोड़ने वो ईंटों से सर बने संग दिल यूँ दोनों हमदम॥
यों कत्ल खुरेजियों से रोशन हुवा था बाजार हिन्दू-मुस०॥ ये०
दुकानों में आग लग रही है यूँ सैकड़ो लुट भी घर चुके हैं॥
वोसैकड़ों निरपराध अपनी गरीब जां से गुजर चुके हैं॥
ये जोसे मजहब से दोनों दल के मचा बहुत ही कह चुके हैं॥
तड़फ रहे अस्पताल में वो हजारों दंगे में मर चुके हैं॥
नुमांया चेहरे से उनके बहेसत बहुतहैं बेजार हिन्दू-मुस०॥ ये०
करो कुदूरत को दूर दिल से जफा जोर होने मत जरा दो।
करो गौर अर्ज पर हमारी डरो न दिल से बहम हटा दो॥
भयंकर दंगे की तर्फ देखो न देश का ख्याल यूँ भुला दो।
उठो नोजवान हिन्द 'आरमाँ' शहर में चेनो अमन बनादो॥
हैमुल्क की आँख अपने दोनों 'विमल, हों गमख्वार हिन्दू मुस ये०—

जमाना

खूने नाहक से भी बढ़ कर है फिसाना आपका ॥ १ ॥
भूल जायेंगे न हम इरविन जमाना आप का ॥ २ ॥
गायेंगे मिल कर के हम सब ये तराना आप का ॥ ३ ॥
टूट जायेगा किसी दिन कैद खाना आप का ॥ ४ ॥
हिन्द से तो उठगया है आबो दाना आपका ॥ ५ ॥
याद आवेगा हमें भी ज़ुल्म ढाना आप का ॥ ६ ॥
बेकसों की छातिओं पर था निशाना आप का ॥ ७ ॥
खार ये हैं देखली गोली चलाना आप का ॥ ८ ॥
हर बशर कहता रहा बेजा सताना आप का ॥ ९ ॥
इग्लैंड में किस जाँ रहोगे क्या ठिकाना आप का ॥ १० ॥
याद आता है 'हरी' सबको लड़ाना आपका ॥ ११ ॥

सरदार पटेल जी का प्रलाप

निकाला फरमा पटेल ने यह कि हिन्द वाले स्वराज्य लेंगे।
न कल का वादा सुनाओ हमको स्वतंत्रता को हम आज लेंगे ॥
अब हिन्द माता का धरके अंचल मचलके बच्चे यों कह रहे हैं।
कि कर्ण अर्जुनके सर पै था जो वही वही पहरनेको ताज लेंगे ॥
जा फंस के परतंत्रता में तेंतिस करोड़ आज़ार सह रहे हैं।
उसी की कीमत में खून देकर खरीद अपना इलाज लेंगे।
भविष्य डंके की चोट देकर यतीन्द्र मुंह से यह कह चुका है ॥
कि हिन्द को वो स्वराज्य देंगे तो पहले खूं का रिवाज लेंगे।
कपट का पांसा था फेंका शकुनी तोजीत बिलकुल लिया कुरूने ॥
मगर यह कहते थे कृष्ण मन में कि राज फिर धर्मराज लेंगे ॥
उधर असंखों हैं बम के गोले व कितनी बन्दूक और तमंचे।
इधर अहिंसा है शस्त्र अपना इसी से संग्राम साज लेंगे ॥
निकल के शायक़ के दिल से आहें प्रभू से बरदान हैं ये लाई।
कि फूल गुल्शन को लेलें गाँधो औ काँटे को बदमिज़ाज न लेंगे ॥

ख्याल लावनी ।

न बाज आयगा ऐ शितमगर, तू अपनी इस नीति कूटता से ।
तो ध्वंश बेशक ही होगा तेरा दुआ ये निकलेगी आत्मा से ॥
है जन्म सिद्ध ही अधिकार अपना, स्वराजता का स्वतन्त्रता का
हुकूक अपना ही चाहते हैं, और पाप रहना है दासता से ॥
महाऋषी गांधी ने है बताया तुम्हारी चालो को पालसी को ।
इसी से जागृति हुई है सबमें सबक मिला है यह रहनुमा से ॥
क्यों बेकसों को सता रहा है, और खूनी खंजर दिखा रहा है ।
तू अपनी हस्ती मिटा रहा है, मिटोगे आहे क़हर खुदा से ॥
मिटे हैं जालिम रहे न कातिल न बाकी नामों निशान उनका ।
तेरी यह हस्ती भी ज़ल उठैगी गर आग निकली दिले फुंगासे
विशम्भर रखना है लाजपत की खज़ाना भारतका पुर जवाहर ।
तो भारतवासी बजाके बंशी, छुड़ादे भारत को दासता से ॥

स्वदेशी प्रचार ।

स्वदेशी प्रेम जनता में अगर एक बार हो जाये ।
हमारा राज्य भारत में बिना तलवार हो जाये ॥
वस्त्र बननें लगें सुन्दर हमारे हिन्द में जिस दिन ।
उसी दम मैनचस्टर का नरम बाजार हो जाये ॥
बिदेशी वस्तु लेने से जभी हम हाथ धो बैठें ।
तभी आधीन यह अपनी कड़ी सरकार हो जाये ॥
सुदर्शन चक्र चर्खें को अगर सब हाथ में लेलें ।
भयानक तोप भी उससे यहां बेकार हो जाये ॥
स्वदेशी प्रेम मिल गाये अगर श्रीराम भारत में ।
बगीचा हिन्द का सूखा अभी गुलज़ार हो जाये ॥
न बेचें यह रुई अपनी कभी हम हाथ गैरों के ।
बनाना वस्त्र कि उनको बहुत दुश्वार हो जाये ॥

N. K. Press Cawnpore.